आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 10 जून, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

परिकल्पना एवं निर्देशन : कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

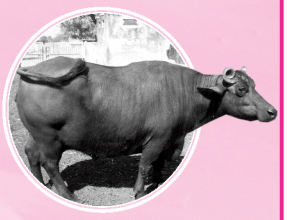

कुलपति सन्देश

ग्लोबल भूमिका के लिए तैयार राजुवास

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

18 मई राजुवास का स्थापना दिवस प्रगति का संकल्प लेने का दिन है। हमें विकास की रफ्तार को बनाए रखकर जन आकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिए कड़ी मेहनत और लगन की जरूरत है। विश्वविद्यालय को प्रशिक्षण, प्रसार, अनुसंधान और शिक्षा को राज्य की पशुधन अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन के लिए समर्पित कर राज्य के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान करना है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद नवीन तकनीकी और अनुसंधान कार्यों की बदौलत राज्य में दूध और ऊन उत्पादन बढ़ा है और अंडों का उत्पादन दोगुना से भी ज्यादा हो जाना पशुधन संपदा के सकारात्मक परिणामों को दर्शाता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के सहयोग से भ्रूण प्रत्यारोपण कार्य शुरू कर थारपारकर नस्ल की गाय में पहला भ्रूण प्रत्यारोपण कर सफलता प्राप्त की है। राज्य की छह स्वदेशी गौवंश की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए हैरिटेज जीन बैंक योजना के साथ ही पशु पोषण, प्रशिक्षण और भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक के उपयोग से दुग्ध क्रांति लाई जा सकेगी। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से भेड़ और बकरियों में भी उन्नत अनुसंधान कार्य किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय द्वारा जिलों में स्थित अपने अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से राज्य में 25 हजार किसानों–पशुपालकों को पशुपालन आधारित कौशल विकास प्रशिक्षण दिया गया है। इस वर्ष 35 हजार लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा प्रारंभ की गई टोल–फ्री हैल्पलाइन की लोकप्रियता के मद्देनजर 100 लाइन का पी.आर.आई. कनेक्शन दूरसंचार विभाग से लिया गया है। इससे देश–विदेश में कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा सुलभ हो गई है। पशुपालकों के हित में रिलायन्स फाउन्डेशन के सहयोग से "मोबाइल वाईस मैसेज" सेवा भी शुरू की गई है। अपनी स्थापना के सात साल के अल्पकाल में विश्वविद्यालय ने चहुँमुखी विकास को तरजीह देकर कार्य किया जिससे यह देश के शीर्ष विश्वविद्यालयों में अपना उच्च स्थान बनाने में कामयाब हो सका। इसमें खास बात यह रही कि विश्वविद्यालयों की 2016 की नेशनल रैंकिंग के मुकाबले 2017 में एक वर्ष की अवधि में 29 विश्वविद्यालयों से आगे निकलकर 68वीं रैंकिंग प्राप्त की है, इससे विश्वविद्यालय द्वारा की गई वृद्धि दर की गति का अंदाजा लगाया जा सकता है। विश्वविद्यालय 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को सामने रखकर नवीन तकनीक, प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लागू करेगा। हमारा निरन्तर प्रयास होगा कि यह देश और दुनिया के सिरमौर विश्वविद्यालयों में शामिल हो।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे द्वारा ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट, कोटा में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'कोटा संभाग में पशुपालन परिदृश्य-वर्तमान एवं भविष्य' का अवलोकन

मुख्य समाचार

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम)–कोटा 2017 में राजुवास की सहभागिता

राजस्थान सरकार द्वारा 24–26 मई, 2017 तक कोटा के आरएसी मैदान पर कोटा संभाग का ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम) आयोजित किया गया। इस मीट में राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा तीनों ही दिन आयोजन की विभिन्न गतिविधियों में शिरकत की गई। ग्राम की एक प्रमुख गतिविधि जाजम चौपाल का आयोजन का सम्पूर्ण जिम्मा राजुवास को सौंपा गया। अन्य प्रमुख तीन गतिविधियां स्मार्ट फार्म, उन्नत सजीव पशु नस्लों का प्रदर्शन और स्मार्ट फार्म में उन्नत तकनीकी प्रदर्शनी में भी राजुवास ने पशुपालन की नवीन तकनीक और नवाचारों का प्रदर्शन किया।

पशुपालन, पशुचिकित्सा एवं डेयरी विषय पर जाजम चौपाल का आयोजन

राजुवास द्वारा 24 व 25 मई 2017 को ग्राम में पशुपालन, पशुचिकित्सा और डेयरी की ''जाजम चौपाल'' के आयोजन का जिम्मा संभाला गया। इसमें वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र व राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के विशेषज्ञों ने जाजम चौपाल में पशुपालन, पशुचिकित्सा एवं डेयरी प्रबंधन विषय पर वैज्ञानिकों ने पशुपालकों व कृषकों के साथ वार्तालाप कर उनकी शंकाओं और समस्याओं का समाधान भी सुझाया। जाजम चौपाल के पहले दिन राज्य के पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ उपस्थित रहे। जाजम के दूसरे दिवस को राज्य के कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी मौजूद रहे। जाजम चौपाल में कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.एम.के. नकवी सहित एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक– डॉ. सुमन्त व्यास, उपनिदेशक पशुपालन विभाग, झालावाड डॉ. औंकार पाटीदार सहित विश्वविद्यालय के 15 वैज्ञानिकों द्वारा कोटा संभाग से आये पशुपालको को कृषि एवं पशुपालन की उन्नत तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

वायस मैसेज सर्विस का शुभारम्भ

ग्राम में राजुवास एवं रिलाएंस फाउण्डेशन के समन्वय से **''वायस मैसेज सर्विस'' (ध्वनि संदेश)** का शुभारम्भ राज्य के कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी द्वारा किया गया। इस सेवा के द्वारा राज्य के पशुपालन विभाग व राजुवास से जुड़े करीब डेढ लाख पशुपालकों को पशुपालन की नवीन जानकारी वायस मैसेज के द्वारा प्रदान की जायेगी।

राजुवास प्रकाशन का विमोचन

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार की गई पुस्तक **कोटा संभाग में पशुपालन परिदृश्य–वर्तमान व भविष्य** का विमोचन राज्य के कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी द्वारा किया गया। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत के संरक्षण में और प्रधान संपादक डॉ. आर.के. धूड़िया द्वारा तैयार इस पुस्तिका में कोटा संभाग के वर्तमान पशुपालन परिदृश्य और भविष्य की संभावनाओं पर एक अधिकृत दस्तावेज बन पड़ा है।

उन्नत नस्ल के सजीव पशु–पक्षियों का प्रदर्शन

विश्वविद्यालय द्वारा ग्राम में तीनों दिन उन्नत नस्ल के पालतू और उपयोगी पशु–पक्षियों का सजीव प्रदर्शन करके किसानों और पशुपालकों को उनकी उपयोगिता बताते हुए उन्नत पशुपालन के लिए प्रेरित किया गया। राजुवास के अनुसंधान केन्द्रों और कुक्कुट शाला में पाले जा रहे पशु–पक्षियों के प्रदर्शन को राज्य की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे, कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी तथा खनन राज्य मंत्री श्री सुरेन्द्र पाल सिंह टीटी ने भी देखा और उनकी उपयोगिता के बारे में पूरी जानकारी ली। माननीय मुख्यमंत्री ने टर्की और बतख पालन के बारे में विशेष रूचि दिखाई। देशी गौवंश की थारपारकर व राठी नस्लों का प्रदर्शन किया गया। किसानों और पशुपालकों को उन्नत नस्ल की बत्तख, राजुवास ब्रॉयलर और टर्की की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त की।

स्मार्ट फॉर्म में राजुवास की चार तकनीकों का प्रदर्शन

स्मार्ट फार्म के अंतर्गत राजुवास की चार उन्नत तकनीकों को दर्शाया गया। बिना जमीन के हाइड्रोपोनिक्स तकनीक द्वारा उत्पादित जौ व मक्का का हरा चारा, सेवण घास की नर्सरी का सजीव प्रदर्शन किसानों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र रहे। पशुओं के लिए पौष्टिक पशु आहार ''अजोला'' (जल की सतह पर तैरने वाली जलीय फर्न) का उत्पादन करने की विधि में कृषकों ने गहरी रूचि दिखाई। हरे चारे को साईलेज के रूप में संरक्षित करने की साईलो बैग तकनीक को भी किसानों ने मौके पर देखा। पशुपालकों ने यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लाक तकनीक को सराहा तथा इसे घर पर तैयार करने की जानकारी प्राप्त की। माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे, कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़, गौपालन विभाग मंत्री श्री ओटाराम देवासी एवं शासन सचिव पशुपालन, श्री अजिताभ शर्मा ने राजुवास द्वारा आयोजित प्रदर्शनी एवं जीवन्त पशुपोषण तकनीकों सहित उन्नत नस्ल के पशुओं का अवलोकन किया गया। ग्राम कोटा–2017 में राजुवास की विभिन्न गतिविधियां प्रो. आर.के. धूडिया निदेशक, प्रसार शिक्षा, बीकानेर एवं डॉ. अतुल अरोड़ा, प्रभारी अधिकारी वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा आयोजित की गई।

पशुपालन तकनीकी का प्रदर्शनी

राजुवास की प्रदर्शनी में 3–डी मॉडल के माध्यम से स्वदेशी गौवंश को प्रदेश में बढावा देने के लिए कृषकों को प्रेरित किया गया। राज्य की 6 स्वदेशी नस्लों में राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी के आकर्षक मॉडल रख कर उनकी विशेषताओं की जानकारी दी गई। पशुपालन की लघु फिल्म प्रदर्शन, पशुओं के उन्नत आहार प्रबंधन, नस्ल संवर्द्धन, पशु स्वास्थ्य और रख–रखाव विषयों पर रंगीन मॉडल, फ्लैक्स का प्रदर्शन कर उपयोगी जानकारी दी गई। प्रदर्शनी में आने वाले सभी पशुपालकों, कृषकों को पशुपालन साहित्य भी प्रदान किया। हाडौती संभाग के करीब 30 हजार किसान और पशुपालकों ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया और राजुवास द्वारा विकसित नवीन पशुपालन, पशुचिकित्सा तकनीकों से रूबरू हुए।

राजुवास में मछलियों का हुआ सी.टी. स्केन

राजुवास और कामधेनू विश्वविद्यालय, गांधीनगर के मध्य पशुचिकित्सा एवं शिक्षा में हुए आपसी करार (एम.ओ.यू.) के तहत मछलियों में शोध कार्यों और विस्तृत अध्ययन का एक पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। इसके प्रारंभिक चरण में समुद्रीय मछलियों की शरीर रचना विज्ञान का डिजिटल अध्ययन राजुवास में स्थापित सी.टी. स्केन मशीन से किया जा रहा है। इससे उनकी आन्तरिक संरचना का डाटा बेस तैयार किया जाएगा।

बीकानेर संभाग के गौशाला प्रबंधकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय और राज्य के गौपालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में बीकानेर संभाग के गौशाला प्रबंधकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 17–19 मई, 2017 को आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन तकनीकी केन्द्र में गौशाला संचालकों को गौपालन और गौ उत्पादों के वैज्ञानिक तौर–तरीकों और उपयोगिता के बारे में पशुचिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा सघन प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के समापन समारोह के मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि गौशालाएं एवं सामाजिक आवश्यकता है जिन्हें स्वावलम्बी बनाने की जरूरत है। यह कार्य पशुओं के वैज्ञानिक प्रबंधन से दुग्ध उत्पादन बढ़ाकर, पंचगव्य के विपणन कार्यों से किया जा सकता है। पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रणजीत सिंह, संयुक्त निदेशक डॉ. ओ.पी. किलानिया, जिले के गौशाला संघ के श्री सूरजमाल सिंह नीमराना एवं गौपालन विभाग जयपुर के संयुक्त निदेशक डॉ. जगदीश प्रसाद अटल ने भी प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण में संभाग के 45 गौशाला प्रबन्धकों को गौपालन के वैज्ञानिक पहलुओं के साथ पंचगव्य की उपयोगिता के बारे में सैद्धान्तिक और प्रायोगिक कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर गौशाला प्रबंधकों की प्रशिक्षण संदर्शिका का विमोचन किया गया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 12, 15, 19, 23, 27 एवं 29 मई को गांव रतनपुरा, बोटिया, भामासी, चैनपुरा छोटा, खयाली एवं राधाबडी गांवों में आयोजित शिविरों में 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 5, 6, 12, 15, 18, 20, 22 एवं 27 मई को गांव कूपली, कमीलपुरा, दौलतपुरा, नगी, उदयपुर गोदरान, 75 एमपी, 54 एलएनपी, साधुवाली गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 219 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षणों का आयोजन

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 18, 23, 25 एवं 27 मई को गांव गुलाबगंज, ऐवडी, भीमाणा एवं अणगौर गांवो में आयोजित शिविरों में 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 11, 12, 15, 16, 17, 19, 20 एवं 22 मई को गांव लोडसर, तंवरा, कुमाशिया, त्रिलोकपुरा, खंगार, मामरोदा, दुजार एवं खंगाशिया गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 191 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 4, 8, 9, 11, 12, 15, 17, 18 एवं 19 मई को गांव समरथपुरा, खवास, माताजी का खेड़ा, सरवाड़, रामपुरा, देवनगर, लक्ष्मीपुरा, भूडोल एवं बरना गांवों.में तथा 30 मई को आयोजित शिविर में 308 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 395 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 12, 15, 17, 18, 22, 24, 26 एवं 29 मई को गांव जंगी, बिडा, करावड़ा, पुंजपुर, भाटावाड़ा, कबजा और धुंधा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 395 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 6, 8, 9, 11, 15, 16, 20 मई को गांव मुढेरा, दूवारकपुर, पालका, आलमसाह, खटौटी, खानपुर, फूला एवं डाबरा एवं 18 मई को आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 32 महिला पशुपालकों सहित कुल 239 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 10, 11, 12, 15, 16, 17, 18 एवं 22 मई को गांव सोनवा, अरनियामाल, रामनगर, लाम्बा, पहाडी, बिडोली, पलेई एवं यादव गोपालपुरा गांवों में तथा 19 मई को आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 263 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 9, 11, 15, 17, 19 एवं 24 मई को शेखसर, धीरदान, ढाणी पांडूसर, अमीरपुरा, मुनाफरसर एवं करणीसर गांवो में आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 204 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा 12, 15, 16, 17 एवं 20 मई को रामखेडली, टहला, कुराडी, अर्जुनपुरा एवं सोली गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 152 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 383 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 4, 5, 6, 8, 10, 11, 18, 19 मई को गांव गिलूड, घटियावली, ओरडी, भादसोड़ा, जयपुरा, बिलोदा, मंगलवाड एवं बोरदा गांवों में तथा 9 एवं 15 मई को केन्द्र परिसर में आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 383 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर द्वारा 6, 10, 22, 23, 25, 26, 27 एवं 29 मई को गांव तोर, बैरावती, कुईया, अतरौली, सिंघावली, कलुआ पुरा, नगला हरलाल एवं लुहारी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 406 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 10, 11, 23, 25 एवं 27 मई को गांव फेफना, परलिका, भाकरावाला चक, रामगढ एवं कीकरली गांवों में एक दिवसीय कृषक – पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 183 कृषकों–पशुपालकों ने भाग लिया।

गौ पशुओं में थिलेरियोसिस रोग को पहचाने

विगत कुछ वर्षो से बीकानेर जिले में गौजातीय उष्णकटिबंधीय थिलेरियोसिस रोग से ग्रसित पशुओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। गौजातीय उष्णकटिबंधीय थिलेरियोसिस एक रक्त प्रोटोजोआ (थिलेरिया एन्युलाटा) जनित रोग है जो कि हायलोमा एनाटोलिकम नामक चींचड़ द्वारा फैलता है। ये चींचड़ रेगिस्तान और मैदान में पाये जाते हैं एवं गर्मी तथा बरसात में अधिक होते हैं। यह रोग मुख्य रूप से गाय, भेड़ और बकरी के साथ ही जंगली पशुओं में देखा जाता है। यह रोग युवा (6 माह से कम आयु) तथा विदेशी एवं संकर नस्ल के पशुओं में अधिक पाया जाता है।

नैदानिक लक्षण :– बुखार, नीली/सुर्ख लाल/रक्ताल्प श्लेष्मा झिल्ली, चींचड़ों का प्रकोप, सूजन युक्त सतही लसीका नोड्स, अत्यधिक लार निकलना, आंख से पानी गिरना, निर्जलीकरण, पाइका, घुटनों के जोड़ो में सूजन, मल में खून/श्लेष्मा लेपित दस्त, नाक बहना, भूख नहीं लगना, पार्श्व लेटना, दम फूलना, चक्कर खाना, रूखे बाल आदि इस रोग के प्रमुख नैदानिक लक्षण हैं। रोगी पशु को तुरन्त नजदीकी पशु अस्पताल ले जावें एवं पशु चिकित्सक से सलाह लेवें।

रोकथामः– पशु को इस रोग से रक्षा के लिए टीका (रक्षावैक–टी) लगवाना चाहिए और चींचड़ों के नियंत्रण के लिए बाह्यपरजीवी नाशक औषधियां काम में ली जा सकती है। पशु घर को स्वच्छ और साफ रखना चाहिए।

शरीर पर चीचड़ों का प्रकोप

मल में खून आना

आंखों से पानी गिरना

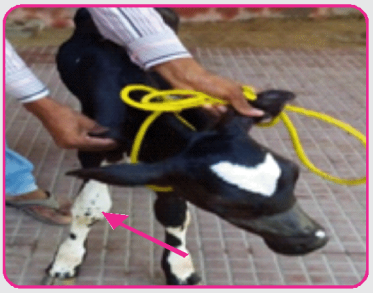

घुटनों के जोड़ों में सूजन

डॉ. पवन गोयल एवं डॉ. अंजू चाहर
महामारी विज्ञान और निवारक पशु चिकित्सा विज्ञान विभाग
सीवीएएस, बीकानेर

आकस्मिक मौसम परिवर्तन व ओलावृष्टि से पशुधन व वन्यजीवों को बचाएं

गर्मियों के इन महिनों में प्रायः देखने में आता है कि मौसम में आकस्मिक परिवर्तन आता है और असाधारण रूप से बरसात के साथ ओलावृष्टि भी हो जाती है। मौसम के अचानक बदलाव के लिए पशु–पक्षी तैयार नहीं रहते हैं तथा उन्हें कई प्रकार की मुश्किलें झेलनी पड़ती हैं। इस अवस्था में कुछ रोग अचानक उभर कर आते हैं जिनमें मुख्य रूप से बड़े पशुओं में गलघोंटू व लंगड़ा बुखार तथा वन्यजीवों व पक्षियों में शॉक की स्थिति है। गलघोंटू रोग से सामान्यतः वो पशु प्रभावित होते हैं जो गर्मी के समय जुताई अथवा भार ढ़ोने के उपयोग में लिए जा रहे हों। वातावरण में ओलावृष्टि व बरसात के कारण अचानक तापमान में बदलाव व अत्याधिक नमी से पशु शरीर में गलघोंटू के जीवाणु सक्रिय हो जाते हैं और पशु गलघोंटू से प्रभावित हो जाता है। इस प्रकार के मौसम परिवर्तन के समय लंगड़ा बुखार भी पशुओं को बहुत प्रभावित करता है जिसमें मुख्य रूप से छोटे पशुओं की मृत्यु हो जाती है। अचानक आंधी–तूफान व ओलावृष्टि से पशु घर को भी नुकसान होता है और पशु दुर्घटना की भी संभावना रहती है। पशु घर के ऊपर पेड़ इत्यादि गिरने से भी पशुओं को चोट लगने से नुकसान हो सकता है। पक्षी घर को नुकसान होने से मुर्गियां सबसे ज्यादा प्रभावित होती हैं। इस अवस्था में मुर्गिया शॉक की स्थिति में चली जाती हैं और कई बार भारी संख्या में मुर्गियों की मृत्यु देखने को मिलती है। पालतू पशुधन के अतिरिक्त आंधी–तूफान व ओलावृष्टि से वन्यजीव भी बहुत बड़े स्तर पर प्रभावित होते हैं। सबसे ज्यादा हिरन, चीतल, चिंकारा, मोर तथा अन्य पक्षी मृत्यु का शिकार बनते हैं। कई बार जन्तुआलय में खुले में रखे वन्य जीवों के साथ ऐसी घटना आम बात है। अचानक मौसम परिवर्तन व असाधारण ओलावृष्टि से पशुधन को बचाने के लिए पशुपालक निम्न सावधानियां बरतें:

- पशुघर व मुर्गीघर की छतों की साफ–सफाई रखें व पानी के निकास को सुनिश्चित करें।
- कच्ची छत को अच्छी तरह से रस्सी इत्यादि से बांध कर रखें ताकि आंधी–तूफान में छत उड़ न सके।
- पानी का रिसाव रोकने के लिए छत पर प्लास्टिक की चादर रखें।
- मुर्गी घर के खिड़की दरवाजे मजबूत रखें।
- मार्च–अप्रेल माह में गलघोंटू व लंगड़ा बुखार के टीके अवश्य लगवाएं।
- मौसम परिवर्तन व असाधारण ओलावृष्टि की संभावना से बचने के लिए जन्तुआलय के कर्मचारी सजग रहें।
- वन्यजीवों व पक्षियों के घायल होने पर उनका तुरन्त प्राथमिक उपचार के साथ पशुचिकित्सक की सहायता से समुचित प्रबंधन करें।

अचानक मौसम परिवर्तन व असाधारण ओलावृष्टि से मरने वाले पशु–पक्षियों को लम्बे समय तक पड़ा न रहने दें और उनके शरीर का तुरंत निस्तारण करें ताकि उन्हें सड़ने से बचाकर वातावरण में संक्रमण के फैलाव को रोका जा सके।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण प्रौद्योगिकी केन्द्र

विश्वविद्यालय में सामाजिक दायित्वों के मद्देनजर पशुपालन के हित में पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना की गई है। मानव और पशु स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इस संस्थान द्वारा विभिन्न पशु रोगों के टीकों, जिसमें पोल्ट्री भी शामिल है तथा जैविक उत्पादों की जांच का कार्य किया जा रहा है। इस केन्द्र में अनुपयोगी पशु चिकित्सकीय सामग्री के निस्तारण के तौर तरीकों पर भी अनुसंधान कार्य किया रहा है। इस केन्द्र का मुख्य कार्य पशु जैव चिकित्सा से उत्पन्न अपशिष्ट का निस्तारण करने के विभिन्न तरीकों को विकसित करने और उनसे होने वाले खतरों को रोकना है। नैदानिक पशुचिकित्सा में उत्पन्न विभिन्न प्रकार के अपशिष्ट जैसे सुई, सीरिंज, टीके, शीशियों आदि टीके, संक्रामक स्टॉक एवं अन्य चिकित्सकीय अपशिष्ट आते हैं। इन्हें विनियमित पशुचिकित्सा अपशिष्ट माना जाता है। इन अपशिष्टों के निस्तारण के लिए हर स्तर पर आवश्यकता आधारित ज्ञान और कौशल की जरूरत है जिससे मानव एवं पशुओं की आबादी के लिए खतरों को रोका जा सके। केन्द्र द्वारा अंग्रेजी व हिन्दी भाषा में दो तकनीकी लघु फिल्में बनाई गई हैं जिसको अंतर्राष्ट्रीय लघु फिल्म समारोह में पुरस्कृत भी किया गया। आमजन को जागरूक करने के लिए केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जून, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुंहपका एवं खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, चित्तौड़गढ़
गलघोंटू	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, जैसलमेर, बीकानेर, सीकर, हनुमानगढ़
न्यूमोनिक–पाश्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टौंक, जालौर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाइमाधोपुर, बीकानेर, सिरोही
ठप्पा रोग	भैंस	जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, भरतपुर, कोटा, बूँदी
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, बांसवाडा, हनुमानगढ़, बून्दी
पर्ण–कृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	श्रीडूंगरगढ़, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, भरतपुर, सीकर
पी.पी.आर. रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, जैसलमेर
तापघात	सभी प्रजाति	सम्पूर्ण राज्य
तीन दिन का बुखार	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें

पूगल नस्ल भेड़ : गौरव प्रदेश का

पूगल नस्ल की भेड़ राजस्थान के बीकानेर व जैसलमेर जिलों में पाई जाती है। इस नस्ल का पूगल नाम इसके उद्‌गम स्थल – पूगल तहसील के कारण पड़ा है। यह नस्ल मजबूत कद काठी की होती है। इसका चेहरा काले रंग का होता है यह काला रंग गर्दन तक फैला हुआ हो सकता है। इसकी आंखों के पास हल्के भूरे रंग की धारियां पाई जाती हैं तथा इसका निचला जबड़ा भी आमतौर पर हल्के भूरे रंग का होता है। कान छोटे तथा नलीदार होते हैं। इसमें सींग नहीं पाये जाते है। पूंछ पतली तथा छोटे से मध्यम आकार की होती है। यह एक से डेढ साल की उम्र में प्रजनन योग्य हो जाती है तथा एक समय में प्रायः एक ही मेमने को जन्म देती है। प्रमुखतया इन्हें मांस तथा ऊन उत्पादन के लिए पाला जाता है। पूगल नस्ल की भेड़ से प्राप्त ऊन सफेद से हल्के भूरे रंग की मध्यम कालीनी गुणवत्ता की होती है तथा अधिक सघन नहीं होती है। एक वर्ष में प्रति भेड़ लगभग 1.5 से 1.75 किलो ऊन प्राप्त हो जाती है। ऊन के रेशे का व्यास लगभग 35 माइक्रॉन व लम्बाई लगभग 6 सेमी. होती है। मेड्यलेशन प्रतिशत 62 होता है। वयस्क भेड़ का शारीरिक भार लगभग 35–40 किलो तथा ऊंचाई 60–62 सेमी. होती है। जन्म के समय मैमने का शारीरिक भार लगभग 2.6 किलो होता है। मेढ़ों का चयन ऊन उत्पादन व शारीरिक भार के आधार पर किया जाता है।

सफलता की कहानी

भेड़ पालन से आर्थिक आत्मनिर्भरता पाई

खेती व पशुपालन के तालमेल से आजीविका करना राजस्थान राज्य में विशेष रूप से पारम्परिक जीवन निर्वाह का एक प्रमुख साधन रहा है। वर्षा आधारित कृषि, सूखे और अतिवृष्टि की स्थिति में पशुपालन सदैव किसानों का बहुत बड़ा अवलम्बन रहा है। पशुपालन से आर्थिक सफलता की ऐसी मिसाल लाडनूं तहसील के घुड़िला गांव के हेमसिंह ने कायम की है। निरक्षर हेमसिंह के पास आजीविका निर्वाह के लिए पुश्तैनी 25 बीघा जमीन है। इन्होंनें भेड़ पालन द्वारा आजीविका कमाने का निर्णय लिया जो बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। अब इनके पास 50 भेड़ें, 10 बकरियां व 5 गायों का टोला है, व प्रतिवर्ष 15 से 20 भेड़ें व मैमने बेचकर आय अर्जित करते हैं। प्रति बकरी 4000 रू. व भेड़ की 3000 रू. कीमत प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही ऊन व दूध बेचकर भी आय प्राप्त करते हैं। इस प्रकार निरक्षरता को पीछे छोड़ खेती व पशुपालन व्यवसाय से घर में रहते हुए आर्थिक रूप से स्वावलम्बी हैं। वर्तमान में बेरोजगारी की बढ़ती समस्या के बीच पशुपालन से स्वरोजगार व आर्थिक स्वावलम्बन का यह एक उत्तम उदाहरण 45 वर्ष के हेमसिंह ने प्रस्तुत किया है। वे वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया से लगातार सम्पर्क में रहकर अपने पालतू पशुओं का प्रतिवर्ष टीकाकरण व डि–वर्मिंग भी करवाते हैं। हेमसिंह की सफलता अन्य किसानों व पशुपालकों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है।

(सम्पर्क – हेमसिंह, लाडनूं मो.नं. 9587045184)

निदेशक की कलम से...

जैविक खेती का आगाज केंचुए की खाद से करें

जीवों से, जीवों द्वारा और जीवों के लिए की जाने वाली खेती जैविक खेती कहलाती है। इसको अपनाने से कृषि में लागत खर्च में कटौती के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण और बढ़ा हुआ उत्पादन भी प्राप्त किया जा सकता है। केंचुआ खाद् और अजोला उत्पादन इकाई की साधारण तकनीक को अपने खेत या घर में लगाकर आप खेती को लाभदायक बनाकर इनकी बिक्री से अतिरिक्त आमदनी भी प्राप्त कर सकते हैं। इन इकाइयों की स्थापना में पारिश्रमिक भी कम है तथा इसके लिए कच्ची सामग्री भी पशुपालकों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो जाती है। यह इकाई कम पानी और समय में शीघ्र खाद का निर्माण कर देती है। केंचुआ खाद की इकाई में उत्पन्न होने वाला एक उप–उत्पाद ''वर्मीवॉश'' फसलीय छिड़काव के काम आता है जो की एक कीटनाशक और पौधों की बढ़वार के लिए अत्यंत उपयोगी है। इस इकाई में विशेष छाया के प्रबंधन की आवश्यकता भी नहीं रहती है। इसकी लागत अन्य सभी तकनीकी से अपेक्षाकृत कम रहती है और इसको लगाने के लिए किसी विशेष प्रशिक्षण और अनुभव की जरूरत नहीं है। इस इकाई को कोई भी किसान या पशुपालक मात्र 15–20 मिनट में अपने खेत पर लगा सकता है। इसमें उत्पादित खाद की गुणवत्ता अन्य किसी तकनीक से अधिक उत्तम व उपयोगी होती है क्योंकि इस खाद में उपलब्ध पोषक तत्वों का ह्रास नहीं होता और खेत की मृदा अधिक उपजाऊ बनती है। स्वयं के खेत पर तैयार केंचुए की खाद की लागत लगभग एक रूपये प्रति किलो पड़ती है जो 2 से 4 रूपये प्रति किलो से बिकती है। यदि आप रासायनिक उर्वरकों के खर्च से मुक्ति, अपनी आय बढ़ाने और भूमि को बंजर होने से रोकना चाहते हैं तो आज ही केंचुए खाद की इकाई लगायें। **–प्रो. आर.के.धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414283388**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **जून 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायं 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. अनिल कुमार बिश्नोई** 7073115386 पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग,सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में दुर्घटना होने के पश्चात देखभाल	01.06.2017
2	**डॉ. सुरेश झीरवाल** 9414242872 पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर।	पशुओं में होने वाले नेत्र रोग एवं उनका उपचार	08.06.2017
3	**डॉ. उर्मिला पानु** 9460226250 पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	जैविक पशुधन उत्पादन : एक सफल व्यवसाय	15.06.2017
4	**डॉ. प्रमोद कुमार** 9414541407 पशु रोग एवं पशु प्रसूति विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में प्रसव के लक्षण, विभिन्न अवस्थाएं एवं ध्यान रखने योग्य बातें	22.06.2017
5	**डॉ. भगतसिंह सैनी** 9829276218 पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं तथा मुर्गियों में टीकाकरण का महत्व	29.06.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया